Subject :- Sociology Date :- 30/04/2020
Class :- D-I (H) Paper :- Ist & Subsidiary
Topic :- सामाजिक परिवर्तन के संघर्षीय सिद्धान्त
By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :- 61

सामाजिक परिवर्तन के संघर्षीय सिद्धान्त

सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों में आज संघर्ष सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका मतलब यह नहीं कि पहले काल के विचारक सामाजिक परिवर्तन में संघर्ष की प्रक्रिया के महत्व को स्वीकार नहीं करते थे। संघर्ष किसी व्यक्ति या समूह द्वारा किया गया वह अर्थपूर्ण प्रयत्न है जो शक्ति, हिंसा, प्रतिकार या विरोधी के द्वारा अन्य व्यक्तियों या समूहों की क्रियाओं में बाधा डालता है। इसमें क्रोध, घृणा ही नहीं बल्कि हिंसा, आक्रमण और क्रूरता के तत्व भी सम्मिलित रहते हैं।

Gillin & Gillin के अनुसार, "संघर्ष एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न व्यक्ति या समूह अपने विरोधियों को हिंसा द्वारा या हिंसा की धमकी देकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।"

इस सिद्धान्त को Herbert Spencer ने सामाजिक जीवन पर लागू किया और सामाजिक परिवर्तन का एक सिद्धान्त लागू किया। जिन विचारकों ने सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है उनमें Hegal, Karl Marx, Gumplowicz, Dahrendorf, Coser, Goffman, Talcott Parsons इत्यादि महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि बहुत से समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन का संघर्ष सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

इस सिद्धान्त के सन्दर्भ में कुछ प्रमुख विचारकों का सिद्धान्त पर प्रकाश डाला जा रहा है :-

L. A Coser का सिद्धान्त :-

Coser ने अपनी पुस्तक "Functions of Social Conflict & Continuities in the Study of Social Conflict" में सामाजिक परिवर्तन का संघर्ष सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। इन्होंने संघर्ष एवं परिवर्तन के बीच कोई प्रत्यक्ष सह-सम्बन्ध नहीं दर्शाया है। किन्तु संघर्ष के जिन प्रकार्यों का इन्होंने उल्लेख किया है, उससे परिवर्तन की प्रक्रिया में संघर्ष का योगदान स्पष्ट होता है। इनके अनुसार संघर्ष विभिन्न प्रकार के

होता है जैसे आन्तरिक संघर्ष, बाह्य संघर्ष, अस्थायी संघर्ष और लम्बे समय तक चलने वाला संघर्ष। संघर्ष केवल पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ही उपज नहीं है बल्कि सभी अर्थव्यवस्थाओं में यह प्रक्रिया किसी न किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान रही है। इन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया है कि सभी सामाजिक संरचना में संघर्ष की अनुमती तथा दबाव की सीमा एक ही नहीं होती बल्कि भिन्न-भिन्न होती है। इन्होंने बताया कि प्रायः सभी समाजों में संघर्ष और हिंसा को निन्दा का पात्र समझा जाता है किन्तु वास्तव में सामाजिक जीवन में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। इन्होंने बताया है कि जिस प्रकार भारतीय धर्मशास्त्रों में सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा है तथा उसके पालन करने वाले विष्णु एवं विनाश करने वाले शिव को देव नहीं बल्कि महादेव समझा जाता है। ठीक उसी प्रकार संघर्ष और हिंसा भी बाह्य रूप से भले ही निन्दनीय कार्य प्रतीत हो किन्तु वास्तव में यह सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

Ratiembater का सिद्धान्त :-

Ratiembater ने संघर्ष को एक सार्वभौमिक प्रक्रिया बताया है। इनके अनुसार संघर्ष किसी विशेष आर्थिक व्यवस्था का परिणाम नहीं है बल्कि मनुष्य में ऐसी अनेक जैविकीय प्रेरणाएँ होती हैं जो उसे अपने हितों के आधार पर उसे संघर्ष करने का प्रोत्साहन देती है। इन्होंने बताया है कि विभिन्न व्यक्तियों द्वारा समूहों के लोगों में अपने हितों की पूर्ति के भावना जितनी ही अधिक पायी जाती है उनमें संघर्ष की प्रवृत्ति भी उतनी ही अधिक दृष्टिगोचर होती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा प्राणी-शास्त्रियं हितों की विभिन्नता के कारण प्रत्येक समाज में विभिन्न व्यक्तियों तथा समूहों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है। चूँकी संघर्ष में व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति की भावना भी पायी जाती है अतः व्यक्तिवादी धारा उत्पन्न होती है। व्यक्तिवादी विचारधारा उत्पन्न होने के कारण समाज में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न होते हैं। फलस्वरूप सामाजिक विभेदीकरण की मात्रा में वृद्धि होती है। इन्होंने यह भी कहा है कि संघर्ष के प्रभाव को कम करने के लिए ही सभी समाज सहयोग को प्रोत्साहन देता है ताकि

Scanned with CamScanner

सामाजिक व्यवस्था में संतुलन बना रहे। अतः Ratienbafer के अनुसार सहयोग की विद्यमानता संघर्ष की संभावना के कारण ही संभव हो सकी है।

M. G. Luck man का सिद्धान्त :-

M. G. Luck man ने अपनी पुस्तक 'Custom & Conflict in Africa' में सामाजिक परिवर्तन का संघर्ष सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। ये मानते हैं कि समाजों के लोगों के रीति-रिवाज एक समान नहीं होते हैं। इन रीति-रिवाजों के कारण ही समाज में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है किंतु पुनः लोगों में सामाजिक समरूपता स्थापित हो जाती है अर्थात् जब समाज के बड़े क्षेत्र पर या एक लम्बे समय तक एक प्रकार के सम्बन्धों में संघर्ष होता है तो इसके कारण सामाजिक एकता की पुनः स्थापना की जाती है। इसी संघर्ष और इसके कारण उत्पन्न सामाजिक एकता की पुनः स्थापना के कारण परिवर्तन संचालित होता है।

Karl Marx का सिद्धान्त :-

Karl Marx की प्रसिद्ध पुस्तक Das Capital में सामाजिक परिवर्तन का संघर्षवादी सिद्धान्त की चर्चा की गयी है। इनके अनुसार समाज में जो परिवर्तन होता है उसके मुख्यतः दो कारण है 1. बुर्जुआ और 2. सर्वहारा वर्ग। इसी दो वर्ग को विभिन्न नाम से भी सम्बोधित किया गया है - अमीर और गरीब, मालिक और नौकर। अमीर वर्ग सर्वदा चाहता है कि उसे अधिक से अधिक लाभ की प्राप्ति हो और गरीब या श्रमिक चाहता है कि उसे अधिक से अधिक पारिश्रमिक प्राप्त हो फलतः दोनों वर्ग में सर्वदा संघर्ष की स्थिति बनी रहती है जिससे कि समाज में परिवर्तन होता रहता है।

Dahrendorf का सिद्धान्त :-

Dahrendorf की पुस्तक 'class & class conflict in industrial society' में सामाजिक परिवर्तन का संघर्ष सिद्धान्त का वर्णन किया है। इनके अनुसार संघर्ष समाज की एक सामान्य तथा स्थायी घटना है। अर्थात् संघर्ष की प्रक्रिया सभी समाजों में पायी जाती है। अतः सभी समाजों में परिवर्तन का आधार संघर्ष है। Dahrendorf के अनुसार "जिस प्रकार संघर्ष परिवर्तन को जन्म देता है उसी प्रकार दबाव संघर्ष को जन्म देता है। संघर्ष की प्रक्रिया सार्वभौमिक है

Scanned with CamScanner

इसलिए कि प्रत्येक सामाजिक संघटन में दबाव या नियंत्रण एक सार्वभौमिक घटना है।"

इन्होंने अपने सिद्धान्त में यह विचार व्यक्त किया है कि अभाव की स्थिति समाज में संघर्ष को जन्म देती है। कुछ व्यक्तियों को समाज में सारी सुविधाएँ प्राप्त रहती है जबकि प्रयाप्त संख्या में ऐसे लोग होते जो अभावग्रस्त रहते है तथा जिन्हे कोई सुविधा प्राप्त नही रहती है। जिस लोगों को सभी सुविधाएँ प्राप्त रहती है उन्हे विशेषाधिकार प्राप्त रहता है और उन्हे शक्ति भी अधिक ही प्राप्त रहती है। जो लोग अभावग्रस्त रहते है वे भी सुविधाएँ प्राप्त करना चाहते है। फलस्वरूप इन दोनो समूहों में संघर्ष उत्पन्न होता है। इसका एक प्रमुख प्रभाव यह होता है कि समाज में विजयी और पराजित दो समूह उत्पन्न होते है। विजयी समूह पराजित समूह को अपनी अधिनता स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है। दूसरा प्रभाव यह होता है कि संघर्ष में लिप्त दोनो ही पक्ष खुशहाल हो जाय। उदाहरणार्थ - हड़ताल संघर्ष की स्थिति का सूचक है। जब हड़तालियों और सरकार के बीच समझौता हो जाता है और श्रमिकों के वेतन तथा अन्य सुविधाओं में वृद्धि हो जाती है और कार्यालयों के कार्य सुचारु रूप से चलने लगते है तथा इससे दोनों की ही पक्षों में खुशी होती है। तिसरा परित्याग यह होता है कि इसके कारण दोनो ही पक्षों को हानी होती है या दोनों का विनाश होता है। चौथा परिणाम यह होता है कि संघर्षरत दोनों पक्षों में बात-चित के द्वार बन्द हो जाय और Deadlock की स्थिति उत्पन्न हो जाय। इन चारो में प्रथम तीन स्थितियों में संघर्ष के कारण सामाजिक परिवर्तन होता है। Dahrendorf के उपर्युक्त सिद्धान्त प्रकार्यवादी विचारकों को मान्य नही है। प्रकार्यवादी ने इसके सिद्धान्त को मानने से इनकार किया है कि समाज में हमेशा संघर्ष होता रहता है। वे इस स्थान पर संतुलन और व्यवस्था को अधिक महत्व देते है। इसी तरह संघर्षवादियों का यह विचार भी उचित नही प्रतीत होता है कि समाज का प्रत्येक सामाजिकविधान में योगदान देता है जिसके फलस्वरूप समाज में परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न होती है। बहुत से विचारको ने सहयोग को समाज का आधार बताया है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner